सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

खंड 2 अंक 6 | अगस्त 2014 | केवल निजी प्रसार हेतु

सातवाँ स्थापना दिवस समारोह

सिक्किम विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के सात वर्ष 2 जुलाई 2014 को पूरा किया . इन सात वर्षो में विश्वविद्यालय के वर्तमान के छ विद्यापीठों के अंतर्गत 29 शैक्षणिक विभाग चल रहे है. किराए के परिसर से कार्य करते हुए भी विश्वविद्यालय राज्य में तथा इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा का एक केंद्र के रूप में अच्छी तरह से अपने आप को स्थापित कर लिया है. सातवें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर कुलपति प्रो. टी.बी.सुब्बा ने अपने भाषण में पिछ्ले साल के दौरान हुई अनेक उपलब्धियों के बारे में बताया जिसमें विधि विभाग को प्राप्त बीसीआई की मंजूरी तथा विश्वविद्यालय में छात्रों के निरंतर ब□ रहे नामांकन शामिल थे. उन्होंने इस अवसर पर समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री आर. बी.सुब्बा, माननीय मंत्री, मानव संसाधन एवं विकास, सिक्किम सरकार के माध्यम से अतिथि के माध्यम से यांगयन में जल्द विश्वविद्यालय के परिसर सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार से अपील की हैं.

श्री सुब्बा ने इस संदर्भ में राज्य सरकार की हर संभव सहायता का आश्वासन दिया और साथ ही उन्होने इस राज्य के लोगों के लिए उच्च शिक्षा के विकास एवं पहुँच बनाने में विश्वविद्यालय की भूमिका को रेखांकित किया.

सुनन्दा के. दत्त राय के ष्ब□ देश जैसे अमरीका, रूस, चीन और भारत जैसे ब□ देश के संदर्भ में निकट विदेश की संकल्पनाष विषय पर विचारोत्तेजक व्याख्यान दोपहर मुख्य आकर्षण रहा. वरिष्ठ पत्रकार और विद्वान ने भारत की विदेश नीति का लंबा इतिहास का अध्ययन किया और इस क्षेत्र के देशों में इसकी प्राथमिकताओं की तुलना की और यह पता लगाया कि कैसे राष्ट्र स्वतन्त्रता के बाद अपने प□ोसी देशों के साथ अपना संबंध बनाया और साथ ही विकसित देशो के साथ समझौता करने दिशा में अग्रसर हुए.

उन्होंने हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण सम. ारोह के दौरान पड़ोस की सरकारों के प्रमुखों के निमंत्रण के महत्व को रेखांकित किया औरइ इस पहल को आगे ले जाने के लिए आर्थ-सामाजिक एवं विकास के मुद्दों पर महत्व देने की आवश्यकता पर बल दिया. श्री दत्ता राय के सम्बोधन के बाद उपस्थित श्रोताओं द्वारा उठाए गए अनेक प्रश्नों के साथ एक गंभीर चर्चा हुई.

विश्वविद्यालय वेबसाइट 'ीजजचरू्ूण्बनेण्बपदध्की ल०ंच होने पर एक छोटी अंतराल के बाद व्याख्यान शुरू किया गया. यह नई वेबसाइट हमारे वैबसाइट प्रबंधन टीम के लगभग एक वर्ष के अथक मेहनत की नतीजा है, जिसे जूमला नामक एक सामग्री प्रबंधन प्रणाली आधारित प्रौद्योगिकी ने विकसित किया है जो सामग्रियों के प्रकार के आधार पर वैबसाइट का वर्गिकरण की सुविधा देता है. वेबसाइट में शामिल की गई सभी सामग्रियां किसी निश्चित वर्ग के अंतर्गत आती है, जिससे ब्राउजिंग में सुविधा हुई और उपयोगकर्ता साथ ही साथ बैकअंड प्रबंधन टीम द्वारा ब्राउजिंग भी काफी ब□ गई है.

इसके बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ. यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों के कार्यक्रमों द्वारा शुरू हुआ और श्रीमति के. पटनायक और नई दिल्ली के उनको सहयोगी द्वारा प्रस्तुत ओडिसी नृत्य तथा दार्जीलिंग के मंत्रा बैंड ने देर शाम तक दर्शकों का मनोरंजन किया.

Editorial Board

Bhumika Dahal (JMC)
Anne Mary Gurung (Political Science)
Jay Kumar (Law)
Ajaykumar N (English)
Vaidyanath Nishant (English)
Rajeev Rajak (Geology)

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

खंड 2 अंक 6 अगस्त 2014 केवल निजी प्रसार हेतु

दार्जिलिंग चाय : क्या चाय श्रमिक इसकी असली स्वाद की चुसकियाँ लेते हैं ?

(टिकेन्द्र कुमार छेत्री, रिसर्च स्कॉलर, शांति और द्वंद्व अध्ययन विभाग द्वारा प्रस्तुत एक लेख)

ष...आपके पास जो हैं उससे ज्यादा की उम्मीद नहीं करें. किसी से डरे नहीं, बल्कि उसी के साथ जिये, जितना बदहाली में आप जी रहे हैं, आपका जीवन इससे अधिक बदतर नहीं हो सकता ...ष

ये पंक्तियाँ मैक्सिम गोर्की की ष्मदरष से हैं जिसमें अपने ही समय में अत्याचार की दुर्दशा का चित्रण है, और ये पंक्तियाँ आज दार्जिलिंग के चाय बागानों के श्रमिकों बुरी हालत के संदर्भ में प्रासंगिक हैं. दार्जिलिंग के कुछ चाय बागानों हाल में हुई यात्रा ने मुझे मैक्सिम गोर्की की किताबों के कुछ पात्रों की याद दिला दी. दरअसल, उत्पीड़न की तरीके एवं उपकरण अलग अलग हैं.

वर्तमान में दार्जिलिंग के चाय बागान के श्रमिक दो प्रमुख समस्याओं का सामना कर रहे हैं. एक बागानों के क्रमिक बंद होना है. प्रथम तीन टी एस्टेट्स 1852 में तुकवार में स्थापित किए गए थे. आज दार्जिलिंग में केवल बयासी चाय बागानें हैं. ये चाय बागान मुख्य रूप से सदर, दार्जिलिंग और कुर्सियांग प्रखण्ड में स्थित हैं. कलिम्पोंग में केवल चार बागान हैं.

ऐसे चाय बागान चोंगथंग, सींगताम, पुतुक, पेसोक, रिंगतंग-वा, टकवार, रंगीत आदि में शुरू हुए थे पर अब मौजूद नहीं हैं. मालिकों के पास उनके बागानों को बंद करने का औचित्य साबित करने के लिए कुछ कारण हो सकता हैं ले. किन इस तरह बागान के बंद होने पर बागान कर्मियों पर पड़े प्रभावों की अनदेखी एवं उपेक्षा की गई है. चाय तोड़नेवाले नियमित मजदूरों के परिवारों के पुनर्वास के लिए अब तक कोई पहल नहीं की गई. बंद बागानों के अंतर्गत आनेवाली वृहत विस्तारित भूमि का स्वामित्व अभी भी अपरिवर्तित है. संबंधित प्राधिकारी भी यहाँ तक प्रस्ताव करने की परवाह नहीं की है कि जमीन अब बेरोजगार श्रमिकों के बीच वितरित किया जाता है.

दूसरी समस्या यह है कि जो बागान अभी चल रहे है वहाँ पर काम करनेवाले मजदूरों की मजदूरी अभी भी निम्न स्तर की है. समय समय पर स्थानीय दैनिकों (हिन्दी, नेपाली, बंगाली और अंग्रेजी) में यह प्रकाशित किया जा रहा है कि स्तंथल, अंब्ते, सींगेल, थरबू तथा अन्य बागान आम तौर पर प्रति किलोग्राम चाय रु. 12000 से रु. 16000 तक विक्री कर रहे हैं. लेकिन इस तरह की गुणवत्ता की चाय के उत्पादन करने के लिए पसीना बहाने वाले श्रमिकों को बहुत कम मज. दूरी का भुगतान किया जाता है.

एलेम लामा की एक ताजा रिपोर्ट इस तथ्य को स्पष्ट रूप से दर्शाती है. उनकी रिपोर्ट एक साल को उत्पादक कार्य दिवसों (दिसम्बर-मार्च) और गैर उत्पादक या सूखी कार्य दिवसों (अप्रैल से नवम्बर) में विभाजित की है. रिपोर्ट के अनुसार गैर उत्पादक महीने, रविवार और अन्य पंजीकृत (राष्ट्रीय और स्थ. ानीय) छुट्टियों के दिनों को छोड़कर , उत्पादक (पत्ती तोड़नेवाले)

संपादक की कलम से

जुलाई 2014 वास्तव में विश्वविद्यालय के लिए एक घटनापूर्ण महीना रहा. 2 जुलाई 2014 को आयोजित सातवें स्थ. ापना दिवस के अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार सुनन्दा के. दत्ता राय के व्याख्यान के बाद संगीत, नृत्य एवं एक रॉक शो का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ. श्री आर.बी.सुब्बा, मानव संसाधन एवं विकास मंत्री, सिक्किम सरकार की उपस्थिति ने समारोह को गरिमामयी बनाया.

जुलाई 2014 शैक्षणिक वर्ष 2013-14 का आखिरी महीना रहा और सत्रांत परीक्षा का आयोजन, उत्तर पुस्तिक. ाओं का मूल्यांकन एवं अंतिम परीक्षा परिणाम के अंतिम रूप देना आदि कार्यों ने सभी शिक्षकों को व्यस्त रखा. परीक्षा परिण ााम 28 जुलाई 2014 को घोषित किया गया, जो निर्धारित समय से कुछ दिनों पहले ही किया गया था. परीक्षा नियंत्रक के कार्यालय इसका प्रबंध किया.

2014 के जुलाई महीने 2014-15 के लिए दाखिले की अंतिम रूप देने के लिए समय रहा. सभी 29 विभाग कार्यों में जुटें रहे. और विश्वविद्यालय में कम से कम 800 छात्र-छात्राएँ हैं और इससे नई जगह की खोज की जरूरत प्रतीत होती है. दो नए ह०स्टलरु एक लड़कियों के लिए और एक लड़कों के लिए खुला गया है. बहुत सारे विभाग नए परिसर में स्थानांतरित किए गए हैं और काजी रोड जैसी दूरी पर भी कुछ विभाग स्थानांतरित हुए हैं.

जूमला नाम से सामग्री प्रबंधन प्रणाली मंच प्रौद्योगिकी की एक नई वैबसाइट हमारे स्थापना दिवस के दौरान शुभारंभ की गई. ीजजचरूध्ध्बनेण्बण्पद हमारी नई वैबसाइट है.

संपादकीय बोर्ड की ओर से मैं हमारे नए छात्रों को तथा पुराने छात्रों को उनके आनेवाले उत्पादक एवं उपयोगी वर्ष के लिए हार्दिक स्वागत करता हूँ

डo. वी.कृष्ण अनंत

(संपादकीय बोर्ड की ओर से)

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

खंड 2 अंक 6 | अगस्त 2014 | केवल निजी प्रसार हेतु

दिनों की कुल संख्या 197 हैं. एक मजदूर प्रति दिन 8 घंटे कार्य करते हुए कम से कम 8 किलो (कम से कम 8 किलो से कम तो□ना दैनिक मजदूरी में कमी का कारण बंता है) हरी पत्तियाँ तो□ता है .

अतः एक मजदूर एक साल में कुल 1576 किलो (197 को 8 से गुना) हरी पपत्तियाँ तो□ता है. यह सब जानते हैं कि 4 किलोग्राम हरी पत्तियों से 1 किलो चाय बन जाता है. अब 1576 को 4 से विभाजित करने पर 394 पाया जाता है. अर्थात एक मजदूर एक साल में 394 किलोग्राम हरी पत्तीय तो□ता है, यानी कि एक वर्ष में एक मजदूर द्वारा नूown्यतम मात्रा में उत्पादित कुल ठोस चाय है 394 किलोग्राम. कीमत भिन्नताओं को अलग रखते हुए प्रति किलो चाय की नून्यतम कीमत अगर रु. 2000६- भी रखा जाए, तो इसका अर्थ यह निकलता है कि ठोस चाय के लिए कार्य करनेवाले एक सामान्य कार्यकर्ता से वार्षिक रु. 4,88,000 आय होती है.

इसके विपरीत एक मजदूर को दैनिक मजदूरी के रूप में 90 रुपये मिलता है जो मनरेगा श्रमिक को मिलन.`वाले दैनिक मजदूरी की तुलना में काफी कम है. एक वर्ष में प्राप्त कुल बोनस को विभाजित करने पर प्राप्त रु.30 दैनिक मजदूरी पर जोड़ा जा सकता है.रुपये. 90 के साथ रु 30 जो□ने पर 120 होता है जो एक मजदूर को मिलनेवाला दैनिक मजदूरी है. यानी दार्जिलिंग के एक चाय मजदूर को एक वर्ष में अधिकतम रु. 37560 मिलती हैं. सांख्यिकीय आंक□ों से स्पष्ट है कि कैसे दार्जिलिंग के मजदूरों का शोषण होता रहा है और कैसे बागान प्राधिकारों द्वारा अधिकतम अधिशेष मूल्यों की फसल की अवहेलना की जा रही है. परिणाम स्वरूप, यह बताया गया है कि इन बंद बागानों के पूर्व श्रमिकों और उनके बच्चे गंभीर भुखमरी, कुपोषण से पीडि□त हैं

प्रकाशन

डo. वी. कृष्ण अनंत, सह प्राध्यापक, इतिहास विभाग
च्वसपजपबे पद जीम ज्पउमे व ि बीनतदपदह . । श्रवनदंसपेजश् च्मतबमचजपवदए क्लं च्नइसपबंजपवदए डंकनतंपए ष्ठछरू 9788192219011

डo. कृष्णेंदु दत्ता, सहायक प्राध्यापक, संगीत विभाग
ाृदककीइंकलमत ठवससपचप टंइदं ष्ठछ 978.81.924455.8.8
जंइसांवींपए ेपंद च्नइसपबंजपवदए ज्ञवसावजजंण ष्ठछ 978.93.84105.00.6

कार्टून क०र्नर

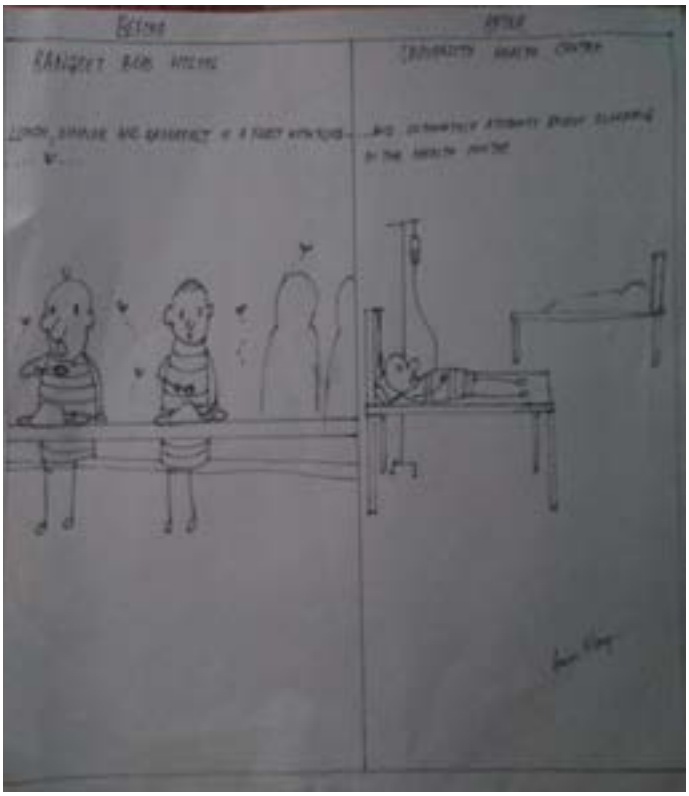

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 4

खंड 2 अंक 6 | अगस्त 2014 | केवल निजी प्रसार हेतु

स्थापना दिवस समारोह : एक फोटो गैलरी

Photographs by Vaidyanath Nishant, Sujal Pradhan and Sandeep Sampang